डॉ. भारिल्ल के विदेश कार्यक्रम में परिवर्तन

डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल प्रतिवर्ष की भाँति इस वर्ष भी धर्मप्रचारार्थ विदेश जा रहे हैं। यह उनकी 30वीं विदेश यात्रा है। जिन भारतवासी बन्धुओं के परिवार या सम्बन्धी निम्न स्थानों पर रहते हों, वे उन्हें सूचित कर दें।

ज्ञातव्य है कि जैन पथप्रदर्शक अप्रैल (प्रथम) अंक में जो कार्यक्रम छपा है, उसमें परिवर्तन हो गया है, परिवर्तित नवीन कार्यक्रम इसप्रकार है ह्र

क्र.	शहर	सम्पर्क-सूत्र	दिनांक
1.	सिंगापुर	**Ashok Patni 006596357834**	8 से 12 जून
2.	लॉस एंजिल्स	**Naresh Palkhiwala (R) 562-404-1729 (O) 626-814-8425 ext. 8725 E-mail : naresh.palkhiwala@westcov.org**	14 से 20 जून
3.	सान् फ्रांसिस्को	**Ashok Sethi (R) 408-517-0975 E-mail : ashok_k_sethi@yahoo.com**	21 से 26 जून
4.	टोरंटो	**Sanjay Jain E-mail : sanjay.jain@opg.com**	28 से 4 जुलाई
5.	शिकागो	**Niranjan Shah (R) 847-330-1088 E-mail : shahniranjan@hotmail.com Bipin Bhayani (O) 815-939-3190 (R) 815-939-0056**	5 से 10 जुलाई
6.	डलास	**Atul Khara 469-831-2163 972-424-4902 insty@verizon.net**	11 जुलाई से 15 जुलाई
7.	लन्दन	**Bhimji Bhai Shah 0044-1923826135 E-mail : bhimji@yahoo.com Jayanti Bhai (Gutka) 0044-208 907 8257 (H) E-mail : jdgudhka@intraport.co.uk**	16 से 18 जुलाई
8.	मुम्बई	श्री परमात्मप्रकाश भारिल्ल	20 जुलाई

वीतराग-विज्ञान

**वीतराग-विज्ञान ही, तीन लोक में सार।
वीतराग-विज्ञान का , घर-घर होय प्रसार।।**

वर्ष : 30 (वीर नि. संवत् - 2538) 346 अंक : 10

परमगुरु बरसत...

**परमगुरु बरसत ज्ञान झरी।।टेक।।
हरषि-हरषि बहु गरजि-गरजि के, मिथ्या तपन हरी।
परमगुरु बरसत...।।1।।
सरधा भूमि सुहावनि लागै, संशय बेल हरी।
भविजन मन सरवर भरि उमड़े, समुझि पवन सियरी।
परमगुरु बरसत...।।2।।
स्याद्वाद नय बिजली चमकै, परमत शिखर परी।
चातक मोर साधु श्रावक के, हृदय सुभक्ति भरी।
परमगुरु बरसत...।।3।।
जप-तप परमानन्द बढ्यो है, सुसमय नींव धरी।
'द्यानत' पावन पावस आयो, थिरता शुद्ध करी।
परमगुरु बरसत...।।4।।**

- कविवर पण्डित द्यानतरायजी

छहढाला प्रवचन

अन्तरात्मा एवं परमात्मा

उत्तम मध्यम जघन त्रिविध के अन्तर-आतम ज्ञानी।
द्विविध संगबिन शुध उपयोगी मुनि उत्तम निज ध्यानी।।४।।
मध्यम अंतर-आतम हैं जे देशव्रती अनगारी।
जघन कहे अविरत-समदृष्टि, तीनों शिवमगचारी।।
सकल निकल परमातम द्वैविध, तिनमें घाति निवारी।
श्री अरिहंत सकल परमातम, लोकालोक निहारी।।५।।
ज्ञानशरीरी त्रिविध कर्ममल वर्जित सिद्ध महन्ता।
ते हैं निकल अमल परमातम, भोगैं शर्म अनंता।।
बहिरातमता हेय जानि तजि, अंतर आतम हूजै।
परमातम को ध्याय निरंतर जो नित आनंद पूजै।।६।।

(सुप्रसिद्ध आध्यात्मिक विद्वान पण्डित दौलतरामजीकृत छहढाला पर गुरुदेवश्री के प्रवचन पाठकों के लाभार्थ यहाँ प्रस्तुत किये जा रहे हैं।)

(गतांक से आगे....)

वीतराग विद्या को जानने वाला अंतरात्मा कैसा है ? इसका समाधान समयसार में दिया है कि वे ज्ञानी अंतरात्मा अपनी ज्ञानचेतना के अतिरिक्त अन्य किसी भाव को किंचित् भी अपना नहीं मानते, सदैव अपने को ज्ञानचेतनारूप ही देखते हैं, अनुभव करते हैं। जब जीव स्वयं भेदज्ञान करके अंतरात्मा हो, तभी वह अंतरात्मा की सच्ची पहचान कर सकता है। अपने में आत्मा का स्वसंवेदन किये बिना अकेले अनुमान के द्वारा दूसरे ज्ञानी धर्मात्मा को भी नहीं पहचाना जाता। अत: यह आत्मा-अनात्मा का भेदज्ञान करके स्वयं अंतरात्मा होने की बात है।

आत्मा के स्वरूप को जो यथार्थ जानता है, वही अंतरात्मा है। आत्मा का स्वरूप राग से व देह से भिन्न है। राग का और देह का नाश होने पर भी आत्मा तो अपने चैतन्यस्वभाव से सदैव जीवंत है, उसके किसी भी स्वभाव-धर्म का कभी नाश नहीं होता। ऐसे अपने शुद्ध आत्मा का अनुभव करने वाला अन्तरात्मा तो परमात्मा

का पड़ौसी है; उसने बहिरात्मपना छोड़कर परमात्मा के साथ संधान किया है। बहिरात्मपना छोड़कर अंतरात्मा होकर परमात्मस्वरूप के ध्यान से जीव परमात्मा बन जाता है। अत: पूज्यपादस्वामी समाधिशतक में कहते हैं कि –

त्रिविध आत्म को जानकर, तज बहिरातम भाव।
होकर अन्तर आतमा, ध्या परमात्मस्वभाव।।

अन्तरात्माओं में किसी को राग भी होता है; क्योंकि भले ही बारहवें गुणस्थान में वीतरागी अन्तरात्मा है; पर नीचे की भूमिका में अभी राग सहित अन्तरात्मा है, किन्तु वह भी अपने आप को उससे भिन्न चेतनस्वरूप जानता है, वह राग को मोक्षमार्ग नहीं मानता। उनमें सातवें से बारहवें गुणस्थान तक के उत्तम अन्तरात्मा तो शुद्धोपयोगी होकर अपने निर्विकल्प आनन्द का ही अनुभव कर रहे हैं, परमात्मदशा उन्हें निकट है। वे तो शुद्धोपयोगी होकर अन्तर में चैतन्यपिंड का साक्षात् अनुभव कर रहे हैं। शेष अन्तरात्माओं को भी ऐसे आत्मा का भान तो है, पर निर्विकल्प ध्यान कभी-कभी होता है।

अरे ! अन्तरात्मा की पहचान भी बहुत सूक्ष्म है, उसको पहचानने से अपने को भी जीव-अजीव का भेदज्ञान हो जाता है।

- देहादि बाह्य को आत्मा माने; सो बहिरात्मा।
- पर से भिन्न अन्तर में आत्मस्वरूप को जाने; सो अन्तरात्मा।
- उत्कृष्ट-परम ज्ञान-आनन्ददशा को प्राप्त; सो परमात्मा।

आत्मा की ऐसी तीन दशा को पहचानकर, बहिरात्मपने को छोड़ना और अन्तरात्मा होकर परमात्मपद को साधना – यही सच्चा मार्ग है। परमात्मा की पहचान अन्तरात्मा को ही होती है, बहिरात्मा उसे नहीं पहचान सकता; बहिरात्मा तो शरीर को ही देखता है।

शरीर और मैं भिन्न हूँ – ऐसी शरीर से भिन्नता भी जिसको नहीं दिखती, वह राग से भिन्न होनेरूप मोक्षमार्ग में कैसे आयेगा ? अन्तर में चैतन्यभाव राग से भिन्न है – ऐसा भान किये बिना मोक्षमार्ग नहीं होता।

मोक्षमार्ग में वर्तनेवाले मुनियों में भी शुद्धोपयोगी मुनियों को उत्तम अन्तरात्मा

कहा और शुभोपयोगी मुनियों को मध्यम अन्तरात्मा कहा; अन्तर में आत्मा का ज्ञान तो दोनों को है; तदुपरान्त जो निर्विकल्प अनुभूति में लीन हैं, उनको उत्तम कहा। शुभोपयोग वालों को उत्तम नहीं कहा, यद्यपि वे भी पंचपरमेष्ठी में हैं; अत: उत्तम हैं। 'साहू लोगुत्तमा' में वे भी आ जाते हैं; परन्तु शुभोपयोगी की अपेक्षा से उनको मध्यम कहा; तब फिर शुद्धात्मा का जिसको भान ही नहीं – ऐसे अज्ञानी के शुभ की तो क्या बात ? वह तो शुभभाव के समय भी बहिरात्मा है और भेदज्ञानी जीव अशुभभाव के समय भी अन्तरात्मा है। परमात्मा को तो शुभ-अशुभभाव होते ही नहीं।

अज्ञानी चाहे शुभभाव करे, अकेले व्यवहार श्रद्धा-ज्ञान-चारित्र का पालन करे तो भी उसका स्थान जघन्य अन्तरात्मा से भी नीचा है अर्थात् वह बहिरात्मा ही है। जघन्य अन्तरात्मा का स्थान तो मोक्षमार्ग में है, परन्तु बहिरात्मा का स्थान मोक्षमार्ग में नहीं है। निर्विकल्प अनुभूतिपूर्वक शुद्ध आत्मा की अन्तर्दृष्टि के बिना सम्यग्दर्शन नहीं होता और सम्यग्दर्शन के बिना अन्तरात्मपना नहीं होता। जघन्य अर्थात् सबसे छोटा अन्तरात्मा भी अन्तर में सच्ची श्रद्धा-ज्ञान सहित ही होता है। श्रद्धा की अपेक्षा उसका जघन्यपना नहीं है, चारित्र की अपेक्षा से जघन्यपना है।

देखो, अन्तरात्मा चाहे उत्तम हो, मध्यम हो या जघन्य हो, वे तीनों प्रकार के अन्तरात्मा मोक्षमार्गी हैं – तीनों शिवमगचारी हैं। चौथे गुणस्थानवाला जघन्य अन्तरात्मा भी मोक्षमार्गी है, शिवमगचारी है। चौथे से बारहवें तक के सभी अंतरात्मा मोक्षमार्ग में चलनेवाले हैं। निश्चयसम्यग्दर्शन के प्रताप से मोक्षमार्ग का प्रारम्भ होता है। जिसको निश्चय सम्यग्दर्शन नहीं – ऐसा जीव व्रतादि करे या द्रव्यलिंग धारण करे तो भी अन्तरात्मा की कक्षा में नहीं आता, वह तो बहिरात्मा ही है। व्रतरहित, किन्तु सम्यक्त्व सहित जीव मोक्षमार्गी है; परन्तु सम्यक्त्वरहित और व्रतसहित जीव मोक्षमार्ग में नहीं है। कोई जीव भले द्रव्यलिंगी होकर पंचमहाव्रत का पालन भी करता हो तो भी मिथ्यादृष्टि को चारित्र के लेश का भी सद्भाव नहीं कहा; जबकि अव्रती होते हुए भी सम्यग्दृष्टि-धर्मात्मा के चारित्रमोह की चार प्रकृतियों (अनंतानुबंधी क्रोधादिक) का तो अभाव हुआ है और उतने अंश में चारित्रगुण व्यक्त हुआ है। अहा ! सम्यग्दृष्टि जीवों की अन्तरदशा कोई अनोखी है।

(क्रमश:)

नियमसार प्रवचन –

आत्मा कैसा है ?

परमपूज्य सर्वश्रेष्ठ दिगम्बराचार्य कुन्दकुन्द के प्रसिद्ध परमागम नियमसार के शुद्धभावाधिकार की 43वीं गाथा पर हुये आध्यात्मिकसत्पुरुष श्री कानजीस्वामी के अध्यात्मरस गर्भित प्रवचनों का संक्षिप्त सार यहाँ दिया जा रहा है।

गाथा मूलत: इसप्रकार है –

णिद्दंडो णिद्दंद्दो णिम्मओ णिक्कलो णिरालंबो।
णीरागो णिद्दोसो णिम्मूढो णिब्भयो अप्पा ।।४३ ।।

निर्दण्ड है निर्द्वन्द है यह निरालम्बी आतमा।
निर्देह है निर्मूढ है निर्भयी निर्मम आतमा ।।४३।।

यह आत्मा निर्दंड, निर्द्वन्द, निर्मम, नि:शरीर, निरालम्ब, निराग, निर्दोष, निर्मूढ और निर्भय है।

(गतांक से आगे ...)

कोई जीव ऐसा कहे कि पर्याय में भी ममता नहीं है अथवा ममता पर के कारण से होती है तो यह मान्यता खोटी ही है; क्योंकि यदि पर के कारण से ममता होती हो तो वह कभी टल नहीं सकती; और यदि ममता होवे ही नहीं तो वर्तमान में प्रगट आनन्द होना चाहिये तथा यदि ममता जितना ही आत्मा हो तो ममता अपना स्थाई स्वरूप ही बन जाय; किन्तु ऐसा नहीं है। मोह-राग-द्वेष एक समय की अवस्था में हैं, उनकी रुचि ही संसार है। उन जितना ही आत्मा को मानना जैनदर्शन नहीं है; किन्तु मोह-राग-द्वेष आत्मा में नहीं है, आत्मा शुद्ध चैतन्य निर्मम है – ऐसे शुद्ध चैतन्य का अवलम्बन लेना धर्म है और यही जैनदर्शन है।

इसप्रकार त्रिकाली निर्मम स्वभाव का आश्रय लेने पर स्वपर-प्रकाशक ज्ञान विकसित होता है और उसमें त्रिकाली स्व-आत्मा को जानते हुए अवशेष राग-द्वेष को भी जान लेने की सामर्थ्य होती है।

(४) शरीर के निमित्तपने की योग्यता पर्याय में है, परन्तु शुद्धस्वभाव में ऐसी योग्यता नहीं है; अत: आत्मा नि:शरीर है।

'निश्चय से औदारिक, वैक्रियक, आहारक, तैजस और कार्मण नाम के पाँच शरीरों के समूह का अभाव होने से आत्मा नि:शरीर है।'

मनुष्य तथा तिर्यंच के औदारिक शरीर होता है। नारकी और देवों के वैक्रियक शरीर होता है। किसी भावलिंगी लब्धिवाले मुनि को तत्त्व में कोई आशंका हो और भगवान के पास जाने की इच्छा करे और लब्धि का प्रयोग करे तो मस्तक में से सफेद पुतला निकलता है, जो भगवान के समीप जाकर शंका समाधान करता है – उस शरीर को आहारक शरीर कहते हैं। शरीर को घर्षण करने से जिस उष्णता का आभास होता है, वह तैजस शरीर की है। तथा आठ कर्मों का समूह कार्मण शरीर है।

तैजस, कार्मण शरीर सर्व संसारी जीवों के होते हैं। इन शरीरों का सम्बन्ध जीव की एक समय की पर्याय के साथ निमित्त-नैमित्तिक रूप में होता है। संसारदशा में शरीर निमित्तरूप से होता है। पाँचों शरीर एक साथ नहीं होते, परन्तु जिससमय जो शरीर हो वही समझ लेना; परन्तु यह सम्बन्ध पर्याय के साथ ही है।

यदि शुद्ध स्वभाव की दृष्टि से देखा जावे तो आत्मा का शरीर के साथ निमित्त-नैमित्तिक सम्बन्ध भी नहीं है।

आत्मा नि:शरीर है, इसी के लक्ष से धर्म होता है। मुनि को आहारक शरीर की लब्धि (ऋद्धि) मिले, वह भी एक समय की पर्याय है। शुद्धात्मा में वह पर्याय नहीं होती और मुनि को लब्धि के ऊपर दृष्टि भी नहीं होती। यदि कदाचित् विकल्प आवे और लब्धि में उपयोग लगावें तो भी त्रिकाली शुद्धात्मा का आश्रय एक समय भी नहीं छूटता। विग्रहगति में मात्र तैजस और कार्माण शरीर ही होते हैं। ज्ञानी जीवों को विग्रहगति में भी इन दोनों शरीरों का आश्रय नहीं होता; अपितु शुद्धात्मा का ही आश्रय होता है।

इसप्रकार अपना शुद्धात्मा शरीर के निमित्त-नैमित्तिक सम्बन्ध से रहित है। ऐसे त्रिकाली स्वभाव की श्रद्धा-ज्ञान करने पर पर्याय में ऐसा निमित्त-नैमित्तिक सम्बन्ध होता है, उसका यथार्थ ज्ञान ज्ञानी को होता है। पर्याय की योग्यता के ज्ञान के कारण त्रिकाली आत्मा का ज्ञान नहीं होता, किन्तु त्रिकाली स्वभाव का ज्ञान होने पर पर्याय का ज्ञान यथार्थ हो जाता है। इसप्रकार नि:शरीरी त्रिकाली शुद्धभाव वाले आत्मा का आश्रय करने से राग-द्वेष का अभाव हो जाता है और पर्याय में शरीर के निमित्त की योग्यता भी नहीं रहती। अत: शरीर का लक्ष छोड़कर शुद्धस्वभाव की श्रद्धा-ज्ञान करना उचित है – वही धर्म है।

(५) कारणपरमात्मा को परपदार्थ तथा शुभाशुभ भावों का अवलम्बन नहीं है; इसलिये आत्मा निरालम्ब है।

'निश्चय से परमात्मा को परद्रव्य का अवलम्बन नहीं होने से आत्मा निरालम्ब है।'

आत्मा को देव-शास्त्र-गुरु का अवलम्बन तो नहीं, परन्तु दया-दानादि भावों का भी अवलम्बन नहीं है। आत्मा को अपने शुद्धस्वभाव का अवलम्बन है; पर का अवलम्बन नहीं है, इसलिये वह निरालम्ब है।

व्यवहारशास्त्रों में कदाचित् ऐसा कथन आवे कि सम्यग्दृष्टि को शुभभाव का तथा भगवान का अवलम्बन है, वहाँ ऐसा समझना चाहिये कि वह कथन निमित्त का ज्ञान कराने के लिये है। आत्मा परपदार्थ और विकार से रहित है - ऐसी श्रद्धा-ज्ञान करने के पश्चात् जब तक परिपूर्ण वीतराग दशा न हो तब तक अपूर्ण दशा में राग आता है और तब जिस-जिस प्रकार के राग के निमित्त हों उनके ऊपर लक्ष जाता है, अतः व्यवहार से उनका आलम्बन लिया - ऐसा कथन करने में आता है।

धर्मी जीव को राग अथवा भगवान का अवलम्बन नहीं है, किन्तु शुद्धस्वभाव का ही अवलम्बन वर्तता है; तथापि वह जानता है कि राग निर्बलता के कारण हुआ है और मेरा लक्ष निमित्त के ऊपर जा रहा है। कोई जीव ऐसा मानें कि अपूर्ण दशा में राग और निमित्त होते ही नहीं तो यह मान्यता खोटी है; तथा कोई राग और निमित्त से ही धर्म हुआ माने तो वह भी मिथ्या ही है। वे जीव निश्चय और व्यवहार दोनों में से किसी को भी नहीं समझते।

धर्मी जीव त्रिकालीस्वभाव का ज्ञान करता हुआ व्यवहार से अधूरी दशा में रहनेवाले राग और निमित्तों का ज्ञान करता है।

इन्द्र भी भक्ति के समय नृत्य करने लगता है। देह की क्रिया देह के कारण होती है। निर्बलता का राग ज्ञान का ज्ञेय है। सम्यग्दृष्टि राग को अपना स्वरूप नहीं मानता। व्रत, तप, पूजा, भक्ति का भाव राग है। जिस भाव से तीर्थंकर नामकर्म बंधे वह भी राग है और उसका आश्रय करने योग्य नहीं। अपना शुद्ध आत्मा ही आलम्बन करने योग्य है - ऐसा जिसे भान है, उसे ही धर्मदशा प्रगट होती है।

तत्त्वार्थसूत्र में विकार को स्वतत्त्व कहा है, उसका कारण यह है कि वह विकार पर के कारण नहीं है, यह जीव स्वयं करता है - इसप्रकार वहाँ पर्याय सत् बतलाना है; और यहाँ उस विकार का अवलम्बन धर्मी जीव को नहीं है - ऐसा बतलाकर शुद्धस्वभाव को निरालम्ब बतलाना है। इसप्रकार धर्मी जीव को शुद्धस्वभाव की ही रुचि वर्तती है।

(क्रमशः)

ज्ञान गोष्ठी

सायंकालीन तत्त्वचर्चा के समय विभिन्न मुमुक्षुओं द्वारा
पूज्य स्वामीजी से पूछे गये प्रश्न और स्वामीजी द्वारा दिये गये उत्तर

प्रश्न : शुद्धस्वरूप का इतना विशाल स्तम्भ दिखलाई क्यों नहीं पड़ता ?

उत्तर : दृष्टि बाहर ही बाहर भ्रमावे, उसको कैसे दिखाई पड़े ? पुण्य के भाव में बड़प्पन देखा करता है; परन्तु अन्दर जो विशाल महान प्रभु पड़ा है, उसे देखने का प्रयत्न नहीं करता। यदि उसे देखने का प्रयत्न करे तो अवश्य दिखाई पड़े।

प्रश्न : जिनबिम्ब-दर्शन से निद्धत्ति और निकांचित कर्म का भी नाश होता है और सम्यग्दर्शन प्रकट होता है - ऐसा श्री धवलग्रन्थ में वर्णन आता है। तो क्या परद्रव्य के लक्ष्य से सम्यग्दर्शन उत्पन्न होता है ?

उत्तर : श्री धवलग्रन्थ में जो ऐसा पाठ आता है उसका अभिप्राय यह है कि जिनबिम्ब स्वरूप निज अन्तरात्मा सक्रिय चैतन्यबिम्ब है, उसके ऊपर लक्ष्य और दृष्टि जाने से सम्यग्दर्शन प्रकट होता है और निधत्ति व निकांचित कर्म टलते हैं, तब जिनबिम्ब-दर्शन से सम्यग्दर्शन हुआ और कर्म टला - ऐसा उपचार से कथन किया जाता है। चूँकि पहले जिनबिम्ब के ऊपर लक्ष्य था, इसलिये उसके ऊपर उपचार का आरोप किया जाता है। सम्यग्दर्शन तो स्व के लक्ष्य से ही होता है, पर के लक्ष्य से तो तीनकाल में हो सकता नहीं - ऐसी वस्तुस्थिति है और वही स्वीकार्य है।

प्रश्न : मिथ्यात्व का नाश स्वसन्मुख होने से ही होता है या कोई और दूसरा उपाय भी है ?

उत्तर : स्वाश्रय से ही मिथ्यात्व का नाश होता है, यही एकमात्र उपाय है। इसके अतिरिक्त दूसरा उपाय प्रवचनसार गाथा 86 में बताया है कि स्वलक्ष्य से शास्त्राभ्यास करना उपायान्तर अर्थात् दूसरा उपाय है, इससे मोह का क्षय होता है।

प्रश्न : सम्यग्दर्शन की उत्पत्ति का कारण क्या है ?

उत्तर : सम्यग्दर्शन की पर्याय प्रगट हुई है वह राग की मंदता के कारण प्रगट हुई है - ऐसा तो है ही नहीं; किन्तु सूक्ष्मता से देखें तो द्रव्य-गुण के कारण सम्यग्दर्शन हुआ है - ऐसा भी नहीं है। सम्यग्दर्शन की पर्याय का लक्ष्य और ध्येय व आलम्बन

यद्यपि द्रव्य है; तथापि पर्याय अपने ही षट्कारक से स्वतन्त्र परिणमित हुई है। जिससमय जो पर्याय होने वाली है उसको निमित्तादि का अवलम्बन तो है नहीं, वह द्रव्य के कारण उत्पन्न हुई है - ऐसा भी नहीं है। भाई ! अन्तर का रहस्य कच्चे पारे की तरह बहुत गम्भीर है, पचा सके तो मोक्ष होता है।

प्रश्न : ''पूर्णता के लक्ष्य से प्रारम्भ सो प्रारम्भ''- ऐसा श्रीमद् राजचन्द्रजी ने कहा है। वहाँ पूर्णता के लक्ष्य से प्रारम्भ में त्रिकाली द्रव्य को लेना अथवा केवलज्ञान पर्याय को लेना ? कृपया स्पष्टीकरण कीजिये।

उत्तर : यहाँ पूर्णता के लक्ष्य में साध्यरूप केवलज्ञान पर्याय लेना। त्रिकाली द्रव्य तो ध्येयरूप है। केवलज्ञान उपेय है और साधकभाव उपाय है। उपाय का साध्य उपेय केवलज्ञान है।

प्रश्न : जिनवर कथित व्यवहारचारित्र का सावधानीपूर्वक पालन सम्यग्दर्शन होने का कारण होता है या नहीं ?

उत्तर : रंचमात्र भी कारण नहीं होता। सम्यग्दर्शन होने का कारण तो अपना त्रिकाली आत्मा ही है। जिनेन्द्र कथित व्यवहारचारित्र को सावधानीपूर्वक और परिपूर्ण पाले, तथापि उससे सम्यग्दर्शन नहीं होता।

प्रश्न : दोनों अपेक्षाओं का प्रमाणज्ञान करें, फिर पर्यायदृष्टि गौण करें, निश्चयदृष्टि मुख्य करें - इतनी मेहनत करने के बदले 'आत्मा चैतन्य है'- मात्र इतना ही अनुभव में आए तो इतनी श्रद्धा सम्यग्दर्शन है या नहीं ?

उत्तर : नहीं; नास्तिकमत के सिवाय सभी मत वाले आत्मा को चैतन्यमात्र मानते हैं। यदि इतनी ही श्रद्धा को सम्यग्दर्शन कहा जाय तो सबको सम्यक्त्व सिद्ध हो जायेगा। सर्वज्ञ वीतराग ने आत्मा का जैसा स्वतंत्र और पूर्ण स्वरूप कहा है - वैसा सत्समागम से जानकर, स्वभाव से निर्णय करके, उसका ही श्रद्धान करने से निश्चय सम्यक्त्व होता है। सर्वज्ञ को स्वीकार करने वाले जीव ने यह निर्णय किया है कि अल्पज्ञ जीव अधूरी अवस्था के काल में भी सर्वज्ञ परमात्मा जैसा पूर्ण सामर्थ्यवान है। पूर्ण को स्वीकार करने वाला प्रतिसमय पूर्ण होने की ताकत रखता है। परोक्षज्ञान में वस्तु के वर्तमान स्वतन्त्र त्रिकाली अखण्ड परिपूर्ण स्वरूप का निर्णय पूर्णता के लक्ष्य से ही होता है। शुद्धनय से ऐसा जानना निश्चय सम्यक्त्व है।

समाचार दर्शन -

अष्टाह्निका महापर्व सानंद संपन्न

(1) अजमेर (राज.) : यहाँ श्री आदिनाथ दि. जिन मंदिर ऋषभायतन अध्यात्मधाम में अष्टाह्निका महापर्व के अवसर पर दिनांक 1 से 8 मार्च तक प्रथम बार श्री इन्द्रध्वज महामण्डल विधान संपन्न हुआ। इस अवसर पर पण्डित ज्ञानचंदजी विदिशा द्वारा प्रात: मोक्षमार्ग प्रकाशक व जैनधर्म के सभी मौलिक सिद्धांतों को बड़े ही सरल ढंग से समझाया गया। इस अवसर पर प्रतिदिन लगभग 500 साधर्मियों ने धर्मलाभ लिया।

रात्रि में श्री वीतराग महिला मण्डल द्वारा प्रतिदिन गोष्ठी एवं प्रश्नोत्तर का कार्यक्रम रखा गया। विधि-विधान का संपूर्ण कार्य पण्डित सुनीलजी 'धवल' भोपाल एवं श्री नवलजी दोशी द्वारा संपन्न कराये गये।

(2) अलवर (राज.) : यहाँ चेतन एन्क्लेव स्थित रत्नत्रय दि. जैन मंदिर में दिनांक 1 से 8 मार्च तक महापर्व के अवसर पर श्री सिद्धचक्र मण्डल विधान का आयोजन किया गया।

इस अवसर पर पण्डित राकेशजी शास्त्री दिल्ली, पण्डित अरुणजी शास्त्री अलवर, पण्डित प्रेमचंदजी अलवर, पण्डित राजीवजी शास्त्री थानागाजी, पण्डित अजितजी शास्त्री अलवर आदि विद्वानों के प्रवचनों का लाभ मिला।

विधान का आयोजन श्री कुन्दकुन्द स्मृति ट्रस्ट, दि. जैन मुमुक्षु मण्डल एवं जैन युवा फैडरेशन द्वारा किया गया। विधि-विधान के संपूर्ण कार्य पण्डित राकेशजी शास्त्री के निर्देशन में पण्डित सुमितजी शास्त्री छिन्दवाड़ा के सहयोग से संपन्न हुये।

डॉ. भारिल्ल अलीगढ में

दिनांक 15 एवं 16 अप्रैल को श्री पवनकुमारजी जैन-मंगलायतन के स्वास्थ्य समाचार जानने हेतु जयपुर से डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल अलीगढ पहुँचे। वहाँ श्री पवनजी के घर पर ही डॉ. भारिल्ल के रहस्यपूर्ण चिठ्ठी पर मार्मिक प्रवचन हुये साथ ही मंगलायतन में अध्ययनरत विद्यार्थियों के लिये 'करोडपति रिक्शे वाला' विषय पर आपके मार्मिक प्रवचन का लाभ मिला।

शिलान्यास सम्पन्न

मुम्बई : यहाँ श्री कुन्दकुन्द कहान दि. जैन मुमुक्षु मण्डल ट्रस्ट, पार्ले-सांताक्रुज के निर्देशन में श्री सीमंधरस्वामी दिग. जिनमंदिर हेतु भूमि शिलान्यास का कार्यक्रम दिनांक 16 अप्रैल 2012 को श्री शांतिलाल रतिलाल शाह परिवार, श्री अनंतभाई अमोलक सेठ परिवार, श्री जयन्तीभाई चिमनलाल दोशी परिवार एवं श्री मधुसुदन निहालचन्द शाह परिवार के करकमलों से हुआ। शिलान्यास विधि पण्डित हेमन्तभाई गाँधी, ब्र. बजूभाई शाह बड़वाण एवं श्री प्रकाशभाई शाह मलाड ने सम्पन्न कराई। इस अवसर पर डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल, पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री देवलाली, ब्र. हेमचन्दजी हेम, ब्र. धन्यकुमारजी बेलोकर, श्री बसंतभाई दोशी, मुम्बई पण्डित रजनीभाई दोशी, एवं पण्डित अश्विनभाई शाह की उपस्थिति उल्लेखनीय रही।

श्री टोडरमल दि. जैन सिद्धांत महाविद्यालय में –

विदाई समारोह सम्पन्न

जयपुर (राज.) : यहाँ ज्ञानतीर्थ श्री टोडरमल स्मारक भवन में दिनाँक 30 मार्च 2012 को श्री टोडरमल दि. जैन सिद्धांत महाविद्यालय के शास्त्री तृतीय वर्ष के छात्रों का विदाई समारोह संपन्न हुआ।

इस प्रसंग पर प्रात: त्रिमूर्ति जिनमंदिर में जिनेन्द्र पूजन का आयोजन महाविद्यालय अधीक्षक पण्डित सोनूजी शास्त्री के निर्देशन में स्वतंत्रभूषण शास्त्री, मयंक शास्त्री एवं शास्त्री द्वितीय वर्ष के अन्य विद्यार्थियों के सहयोग से किया गया।

इस अवसर पर दो सत्रों (दोपहर एवं रात्रि) में आयोजित समारोह की अध्यक्षता पण्डित रतनचंदजी भारिल्ल ने की। मुख्य अतिथि तत्त्ववेत्ता डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल थे तथा विशिष्ट अतिथि के रूप में श्री पूनमचंदजी छाबड़ा, ब्र. यशपालजी जैन, पण्डित शान्तिकुमारजी पाटील, पण्डित पीयूषजी शास्त्री, पण्डित संजीवकुमारजी गोधा, डॉ.दीपकजी वैद्य, पण्डित संजयजी सेठी, पण्डित सोनूजी शास्त्री, पण्डित मनीषजी शास्त्री कहान, श्री दिलीपभाई शाह, श्री शान्तिलालजी अलवरवाले, श्री ताराचंदजी सोगानी, पण्डित तपिशजी शास्त्री, पण्डित निशान्तजी शास्त्री, पण्डित अनेकान्तजी शास्त्री, श्रीमती कमला भारिल्ल एवं श्रीमती गुणमाला भारिल्ल मंचासीन थे।

कार्यक्रम में अनेक विद्यार्थियों ने अपने पाँच वर्षो के अनुभव सुनाते हुये महाविद्यालय को वर्तमान परिप्रेक्ष्य में विद्या का सर्वश्रेष्ठ केन्द्र बताया एवं स्वयं को अध्यात्म विद्या पढ़ने का विशेष सौभाग्यशाली विद्यार्थी बताते हुए इस विद्यालय में पढने हेतु अपने मित्रों/परिजनों को भेजने का संकल्प भी व्यक्त किया। महाविद्यालय के प्राचार्य पण्डित रतनचंदजी भारिल्ल एवं अन्य विशिष्ट अतिथियों ने शास्त्री तृतीय वर्ष के विद्यार्थियों को भविष्य को उज्ज्वल बनाने की प्रेरणा, आशीर्वाद एवं मार्गदर्शन दिया।

डॉ. भारिल्ल ने शास्त्री तृतीय वर्ष के विद्यार्थियों से कहा कि ''अभी तक तो आप यहाँ पर अपने शिक्षकों से शिक्षा ले रहे थे; परन्तु अब आपको बाहर कार्यक्षेत्र में जाकर उस शिक्षा का प्रयोग करना है।'' जब एक विद्यार्थी ने डॉ. भारिल्ल को 'दबंग' की उपाधि दी, तब डॉ. भारिल्ल ने यह उपाधि यह कहते हुए स्वीकारी कि 'दबंग' का तात्पर्य होता है निडर और उन्होंने (डॉ. भारिल्ल) ने बिना डरे तत्त्वज्ञान का प्रचार किया है, कर रहे हैं तथा वे जैनधर्म के सिद्धांतों से कभी हटे नहीं हैं, सिद्धांतों की कीमत पर कभी कोई समझौता नहीं किया।

इस विदाई समारोह में शास्त्री द्वितीय वर्ष के सभी छात्रों ने पूरे कार्यक्रम में राजस्थानी ग्रामीण संस्कृति की थीम का प्रयोग करते हुए प्रवचन मण्डप को बहुत सुन्दर रूप से सजाया था। इस बार के विदाई समारोह में पहली बार शास्त्री द्वितीय वर्ष द्वारा शास्त्री तृतीय वर्ष के सभी विद्यार्थियों को उनकी विशेषता, पहचान आदि के आधार पर अलग-अलग अवार्ड दिये गये, जैसे – बेस्ट सिंगर, बेस्ट कवि, चिन्तनशील ऑफ द क्लास आदि। अंत में शास्त्री तृतीय वर्ष के सभी

विद्यार्थियों को ग्रंथ व श्रीफल भेंट कर सम्मानित किया गया।

इस कार्यक्रम के अन्तर्गत महाविद्यालय के इस सत्र (2011-12) के विशिष्ट पुरस्कारों की भी घोषणा की गई, जिसमें **आदर्श कक्षा** का पुरस्कार उपाध्याय वरिष्ठ कक्षा को एवं **आदर्श विद्यार्थी** पुरस्कार नवीन जैन उज्जैन (शास्त्री प्रथम वर्ष) को दिया गया। इसी क्रम में प्रत्येक कक्षा में आदर्श छात्र के रूप में उपाध्याय कनिष्ठ से अच्युतकांत जसवंतनगर, उपाध्याय वरिष्ठ से जिनेश सेठ मुम्बई, शास्त्री प्रथम वर्ष से साकेत जैन जयपुर, शास्त्री द्वितीय वर्ष से विवेक जैन भिण्ड, शास्त्री तृतीय वर्ष से आकाश जैन खनियांधाना को आदर्श विद्यार्थी का पुरस्कार दिया गया। साथ ही महाविद्यालय में अध्ययन करते हुए व्यवस्थाओं में सहयोग हेतु विशिष्ट विद्यार्थी पुरस्कार की भी घोषणा की गई, जिसमें चिकित्सा सेवा के लिए सचिन जैन गड़खेड़ा (शास्त्री प्रथम वर्ष) एवं सुधर्म जैन बेलगांव (कर्नाटक) व प्रफुल्ल जैन शेडवाल (कर्नाटक) को अन्य कार्यों में विशिष्ट सहयोग हेतु पुरस्कृत किया गया।

मङ्गलाचरण जीवेश जैन ने एवं संचालन विवेक जैन भिण्ड, ज्ञायक समैया, आशीष महाजन, जीवेश जैन, सनत जैन, मयंक जैन, कु.अनुभूति जैन एवं कु. नयना जैन ने किया।

ऋषभदेव जयन्ती पर संगोष्ठी संपन्न

1. नई दिल्ली : यहाँ श्री लालबहादुर शास्त्री राष्ट्रीय संस्कृत विद्यापीठ (मानित विश्वविद्यालय) कुतुब संस्थानिक क्षेत्र के जैन दर्शन विभाग द्वारा दिनांक 16 मार्च को प्रतिवर्ष की भांति इस वर्ष भी ऋषभदेव जयन्ती संगोष्ठी का आयोजन किया गया।

इस अवसर पर मुख्य वक्ता जैनदर्शन शोध संस्थान, नई दिल्ली के निदेशक प्राचार्य श्री निहालचंदजी जैन थे। सभा की अध्यक्षता प्रो. शुद्धानंदजी पाठक ने की। स्वागत भाषण करते हुए विभागाध्यक्ष प्रो. वीरसागरजी शास्त्री ने कहा कि ऋषभदेव को पुरुदेव, आदिनाथ आदि नामों के साथ-साथ अन्य देशों तथा धर्मों में भी बाबा आदम, रेशेफ तथा बुल्गोद के नाम से जाना जाता है। सभा का संचालन करते हुए डॉ. अनेकान्तजी जैन ने कहा कि मोहनजोदारो, हड़प्पा में जिन योगी की प्रतिमा प्राप्त हुई है वे ऋषभदेव ही हैं। धन्यवाद ज्ञापन डॉ. कुलदीपजी ने किया। कार्यक्रम का मंगलाचरण प्रो. जयकुमारजी उपाध्ये ने किया।

2. जयपुर : यहाँ राजस्थान चैम्बर भवन में ऋषभदेव जयन्ती के अवसर पर दिनांक 16 मार्च को राजस्थान जैन सभा के तत्त्वावधान में विचार गोष्ठी का आयोजन किया गया।

'युग प्रवर्तक के रूप में ऋषभदेव एवं भरत चक्रवर्ती का योगदान' विषय पर आयोजित इस गोष्ठी में मुख्यवक्ता के रूप में डॉ. अनिलजी जैन (निदेशक, जैन अनुशीलन केन्द्र, राज. विश्वविद्यालय) एवं पण्डित संजीवकुमारजी गोधा जयपुर ने अपने मार्मिक उद्बोधन में ऋषभदेव को लौकिक एवं पारलौकिक दोनों प्रकार से युग प्रवर्तक सिद्ध किया।

सभा की अध्यक्षता श्री महेन्द्रकुमारजी पाटनी ने की। मुख्य अतिथि के रूप में डॉ0 पी.सी. जैन (पूर्व संकाय अध्यक्ष कृषि महाविद्यालय, जोधपुर) थे।

कार्यक्रम का संयोजन श्री प्रकाशजी अजमेरा एवं श्री महेशचन्दजी चांदवाड़ ने किया।

जयपुर पंचकल्याणक प्रत्यक्षदर्शियों की कलम से ह्न

जयसिंगपुर-कोल्हापुर (महा.) से कल्पवृक्ष चेरिटेबल ट्रस्ट के मैनेजिंग ट्रस्टी श्री शान्तिनाथ ज. पाटील लिखते हैं कि –

''मैंने अपने 70 वर्ष के जीवन में 60-70 से भी अधिक पंचकल्याणक दक्षिण में देखे हैं, कुछ प्रतिष्ठा में तो राजा, इन्द्र, कुबेर बनने का सौभाग्य भी मिला, मेरे निर्देशन में भी कुछ पंचकल्याणक संपन्न हुये; परन्तु अभी जयपुर का जो पंचकल्याणक महोत्सव देखा है, उसके सामने बाकी 60-70 पंचकल्याणक अधूरे लगे। यहाँ भी विधि-विधान होता है; परन्तु क्यों और किसलिये विधि की जा रही है, उसका ज्ञान हमें नहीं था, उस सम्बन्धी विशेष ध्यान भी नहीं दिया जाता था, मात्र बोली, बैण्डबाजे, हाथी, घोड़े, आरती-भक्ति तक ही पंचकल्याणक सीमित रहे हैं। ज्ञानार्जन का जो काम होना चाहिये, वह जयपुर में प्रमुखता से देखने में आया।

मेरे गुरु श्री समन्तभद्रजी महाराज (बाहुबली) कहा करते थे कि 'पूजा-विधान व शिविर का आयोजन देखना अथवा सीखना हो तो जयपुर, सोनगढ वालों से सीखो, समय का क्या महत्व है।' मैंने अपनी आँखों से पूरा पंचकल्याणक देखा, एक भी कार्यक्रम देर से या समय के पहले समाप्त नहीं हुआ। मैं इसे एक सुयोग्य नियोजन का सर्वोत्तम फल समझता हूँ।

इस प्रतिष्ठा महोत्सव का मैं एक ऐसा साक्षीदार हूँ, जिसने जब पहले दिन मण्डप में प्रवेश किया तब से पूरे सात दिन के बाद ही मण्डप से बाहर आया, एक क्षण भी किसी कार्यक्रम से वंचित नहीं रहा। मेरे 70 वर्ष की उम्र में मैं इसे बड़ी उपलब्धि समझता हूँ।

पं. टोडरमल स्मारक ट्रस्ट के सम्मानीय ट्रस्टी, प्रतिष्ठा सहयोगी, भावी परमात्मा (विद्यार्थी विद्वान) एवं साधर्मीजनों ने जो तन-मन-धन से सहयोग दिया, वह स्वर्ण अक्षर में लिखने योग्य है। साधर्मियों के प्रति कैसा स्नेह होना चाहिये, यह प्रतिष्ठा में देखने को मिला।

महोत्सव की तैयारी तो काफी दिनों से चल रही थी। दक्षिण प्रान्त में भी काफी चर्चा होती रहती थी। महावीर पाटील जयपुर पंचकल्याणक के सम्बन्ध में कहते थे कि एक बार जयपुर पंचकल्याणक जरूर देखना। वहाँ के विधि-विधान यह देखने जरूर जाना कि साधर्मियों का वात्सल्य कैसा होना चाहिये और कैसा होता है। अपने घर के पधारे जमाई को जो सन्मान देते हो उससे भी अच्छा आपको वहाँ सम्मान मिलेगा। यह बात सुनकर कुछ नये जिज्ञासु भी वहाँ पहुँचे। लगभग 600 से भी अधिक साधर्मीजन दक्षिण (कर्नाटक-महाराष्ट्र) से आये थे।

वहाँ की पूरी व्यवस्था देखने के बाद लोगों ने कहा कि हमारे यहाँ तो नये जमाई की एक ही दिन खातिरदारी होती है और दूसरे दिन सुबह विदाई का कार्यक्रम होता है। आपने तो सात दिन तक पधारे सभी साधर्मियों की खूब खातिरदारी की, वह भी पूरे सात दिन तक।

यह आदर्श पंचकल्याणक देखकर मेरी भी तीव्र भावना जागृत हुई कि ऐसा एक छोटा सा पंचल्याणक महोत्सव जयसिंगपुर नगर में हो जिसका निर्देशन आप ही करें। जिससे दक्षिण प्रान्त के लोगों के लिए एक आदर्श स्थापित हो, इस कार्य के लिए मैं कटिबद्ध हूँ, आप अपनी राय से जरूर अवगत कराना। पुन: एक बार सभी सहयोगी बन्धुओं को याद करके विराम लेता हूँ।''

रत्नत्रय विधान संपन्न

भीलवाड़ा (राज.) : यहाँ आदिनाथ मांगलिक भवन में दिनांक 23 से 25 मार्च तक रत्नत्रय मण्डल विधान का आयोजन किया गया। इस अवसर पर तत्त्ववेत्ता **डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल** द्वारा ग्रन्थाधिराज समयसार पर मार्मिक प्रवचन हुये। साथ ही पण्डित संजयजी शास्त्री मंगलायतन द्वारा भी प्रवचनों का लाभ मिला। विधान का उद्घाटन श्री ज्ञानमलजी पाटौदी भीलवाड़ा एवं ध्वजारोहण श्री चांदमलजी लुहाड़िया भीलवाड़ा ने किया।

इस अवसर पर लगभग 500 साधर्मियों ने धर्मलाभ लिया एवं डॉ. भारिल्ल के प्रवचनों की 80 सीडियाँ नि:शुल्क वितरित की गईं। विधि-विधान के समस्त कार्य पण्डित अशोकजी लुहाड़िया मंगलायतन एवं पण्डित संजयजी शास्त्री मंगलायतन द्वारा संपन्न कराये गये।

(पृष्ठ 18 का शेष ...)

इस गाथा और इसकी टीका में यही कहा गया है कि इन्द्रियों के व्यापार के परित्यागरूप संयम, आत्मा की आराधना में तत्परतारूप नियम, स्वयं को स्वयं में धारणरूप तप, स्वात्माश्रित निश्चय धर्मध्यान और निरंजन निज परमात्मतत्त्व में अविचल स्थितिरूप शुक्लध्यानरूप विशेष सामग्री सहित, अखण्ड, अद्वैत, परमचैतन्य आत्मा का ध्यान ही परमसमाधि है।

इसके उपरान्त टीकाकार मुनिराज एक छन्द लिखते हैं; जो इसप्रकार है ह्न

(अनुष्टुभ्)

निर्विकल्पे समाधौ यो नित्यं तिष्ठति चिन्मये।
द्वैताद्वैतविनिर्मुक्तमात्मानं तं नमाम्यहम् ।।२०१ ।।

(हरिगीत)

निर्विकल्पक समाधि में नित रहे जो आतमा।
उस निर्विकल्पक आतमा को नमन करता हूँ सदा ।।२०१।।

जो सदा चैतन्यमय निर्विकल्प समाधि में रहता है; उस द्वैताद्वैत के विकल्पों से मुक्त आत्मा को मैं नमन करता हूँ।

उक्त छन्द में समाधिरत आत्मा को अत्यन्त भक्तिभाव से नमस्कार किया गया है। ●

पूज्य गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के समस्त ऑडियो – वीडियो प्रवचन साहित्य एवं अन्य अनेक जानकारियों के लिये अवश्य देखें –
वेबसाईट – www.vitragvani.com
संपर्क सूत्र–श्री कुन्दकुन्द कहान पारमार्थिक ट्रस्ट, मुम्बई
Ph.: 022-26130820, 26104912, E-Mail- info@vitragvani.com

शोक समाचार

1. अशोकनगर (म.प्र.) निवासी श्रीमतीबाई चौधरी धर्मपत्नी श्री लक्ष्मीचंदजी चौधरी का दिनांक 20 फरवरी को धर्मश्रवण करते हुए समताभाव से देहावसान हो गया।

आप एक धार्मिक महिला थीं। आपकी स्मृति में 11 लाख की राशि से श्रीमतीबाई लक्ष्मीचंद चौधरी पारमार्थिक ट्रस्ट की स्थापना की गई। 225000 रुपये विभिन्न तीर्थों एवं शिक्षण संस्थाओं को दान देने की घोषणा की गई, जिसमें 11 हजार रुपये टोडरमल स्मारक ट्रस्ट हेतु प्राप्त हुये। ज्ञातव्य है कि आप दीवानगंज भोपाल के ट्रस्टी श्री महेन्द्रकुमारजी जैन कोहेफिजा की मातुश्री हैं।

2. पिड़ावा (राज.) निवासी श्रीमती सूरजबाई का दिनांक 25 दिसम्बर 2011 को आत्मचिंतवन पूर्वक देहावसान हो गया। ज्ञातव्य है कि आप टोडरमल महाविद्यालय के स्नातक श्री विवेकजी शास्त्री की दादीजी थीं। आपकी स्मृति में जैनपथप्रदर्शक हेतु 101/- रुपये प्राप्त हुये।

3. मुम्बई निवासी श्रीमती मंजुलाबेन किशोरभाई गोपाणी का दिनांक 15 फरवरी 2012 को 80 वर्ष की आयु में आत्म चिंतन-मनन करते हुए समताभाव से देहावसान हो गया। आप अत्यंत स्वाध्यायी महिला थीं एवं गुरुदेवश्री कानजीस्वामी की परम भक्त थीं। आपकी स्मृति में वीतराग-विज्ञान हेतु 2500/- रुपये प्राप्त हुये।

4. गंजबासौदा-विदिशा (म.प्र.) निवासी श्री बच्चूलालजी जैन का दिनांक 11 मार्च 2012 को 82 वर्ष की उम्र में आत्मचिंतवन करते हुए शांतपरिणामोंपूर्वक देहावसान हो गया। आप अत्यंत स्वाध्यायी थे, जयपुर शिविर में नियमित रूप से आकर लाभ लेते थे। ज्ञातव्य है कि आप टोडरमल महाविद्यालय के स्नातक डॉ. संजीव जैन गंजबासौदा के पिताजी थे।

5. अहमदाबाद (गुज.) निवासी श्री चन्दुलाल कचरालाल शाह का दिनांक 25 जनवरी को 95 वर्ष की उम्र में अत्यन्त स्वस्थ अवस्था में शांतपरिणामोंपूर्वक देहावसान हो गया। आप अच्छे स्वाध्यायी थे।

6. नातेपुते-सोलापुर (महा.) निवासी श्री रायचंदभाई दोशी का दिनांक 23 मार्च को 95 वर्ष की आयु में नियम सल्लेखनापूर्वक देहावसान हो गया। आप बहुत शांतपरिणामी एवं स्वाध्यायी थे। आपकी स्मृति में पं. शीतलजी दोशी एवं श्री श्रेयांसजी दोशी की ओर से 501/- रुपये जैनपथप्रदर्शक हेतु प्राप्त हुये।

7. सोनगढ (गुज.) निवासी श्री प्रदीपभाई मनसुखलाल देसाई का दिनांक 3 मार्च को 59 वर्ष की आयु में गुरुदेवश्री कानजीस्वामी का प्रवचन सुनते-सुनते देहावसान हो गया।

आप गहन तत्त्वाभ्यासी थे। आपका जन्म सोनगढ में ही हुआ था। जीवन के अन्तिम 6 वर्ष आपने सोनगढ में ही बिताये।

8. दौसा (राज.) निवासी श्रीमती शकुन्तला देवी छाबड़ा धर्मपत्नी श्री माणकचंदजी छाबड़ा का दिनांक 11 जनवरी 2012 को 68 वर्ष की आयु में शांतपरिणामोंपूर्वक देहावसान हो गया। आप बहुत ही धार्मिक महिला थीं एवं दौसा नगर में चलने वाली स्वाध्याय आदि गतिविधियों में सक्रिय भूमिका निभाती थीं। आपकी स्मृति में जैनपथप्रदर्शक हेतु 1100/- प्राप्त हुये।

दिवंगत आत्मायें शीघ्र ही अभ्युदय को प्राप्त हों - यही भावना है।

महावीर जयन्ती सानन्द संपन्न

1. जयपुर (राज.) : यहाँ श्री टोडरमल समारक भवन में महावीर जयन्ती के अवसर पर दिनाँक 4 अप्रैल को प्रात: ध्वजारोहण टोडरमल महाविद्यालय के प्राचार्य पण्डित रतनचंदजी भारिल्ल के करकमलों द्वारा हुआ। उनके साथ ब्र. यशपालजी जैन, पण्डित पूनमचंदजी छाबड़ा आदि महानुभाव भी उपस्थित थे। इसके पश्चात् प्रभात फेरी निकाली गई।

जिनेन्द्र भक्ति एवं नाच गान करते हुए रथयात्रा लालकोठी मंदिर पहुँची, जहाँ ध्वजारोहण एवं कलशाभिषेक हुआ। इसके पश्चात् रथयात्रा पार्श्वनाथ चैत्यालय पहुँची, जहाँ ध्वजारोहण व कलशाभिषेक के पश्चात् आयोजित सभा में पण्डित रतनचंदजी भारिल्ल का मार्मिक उद्बोधन हुआ। इसके पश्चात् रथयात्रा जयपुर शहर की मुख्य रथयात्रा में सम्मिलित हुई। **– सुरेन्द्र पाटनी**

2. कोटा (राज.) : यहाँ मुमुक्षु आश्रम में महावीर जयन्ती के अवसर पर प्रात: प्रभात फेरी निकाली गई। इस अवसर पर महावीर पंचकल्याणक विधान का आयोजन किया गया।

यहाँ इन्द्रविहार में दि. जैन महासमिति द्वारा **'वर्तमान समस्याओं का समाधान महावीर के सिद्धांतों से'** विषय पर एक संगोष्ठी का भी आयोजन किया गया, जिसमें पण्डित धमेन्द्रजी शास्त्री कोटा ने अपना वक्तव्य दिया।

3. उदयपुर (राज.) : यहाँ अ.भा.जैन युवा फै. एवं महिला मण्डल नेमिनाथ कॉलोनी के संयुक्त तत्त्वावधान में महावीर जयन्ती के अवसर पर वी.वि.पाठशाला के बच्चों को पुरस्कृत किया गया। साथ ही भगवान महावीर के सिद्धांतों पर आधारित गोष्ठी भी रखी गयी, जिसमें युवा फैडरेशन एवं महिला मण्डल के अनेक सदस्यों ने अपने वक्तव्य रखे। कार्यक्रम का संचालन डॉ. महावीरप्रसादजी शास्त्री उदयपुर ने किया। **– जिनेन्द्र शास्त्री**

आध्यात्मिक शिक्षण शिविर संपन्न

खनियांधाना (म.प्र.) : यहाँ चेतन बाग स्थित नंदीश्वर जैन मंदिर में श्री सिद्धचक्र मण्डल विधान एवं आध्यात्मिक शिक्षण शिविर का आयोजन दिनांक 5 से 12 मार्च तक किया गया। इस अवसर पर ब्र. सुमतप्रकाशजी, पण्डित राजकुमारजी शास्त्री गुना, पण्डित राकेशजी शास्त्री दिल्ली, ब्र. अमितजी मोदी विदिशा, पण्डित सचिनजी अकलूज, पण्डित मिश्रीलालजी, पण्डित वीरेन्द्रजी शास्त्री जयपुर एवं स्थानीय विद्वानों के प्रवचनों एवं कक्षाओं का लाभ प्राप्त हुआ।

ध्वजारोहण श्री सुधीरजी जैन (तहसीलदार) पांडुरना-छिन्दवाड़ा एवं शिविर उद्घाटन श्री एस.पी. जैन (एस.डी.ओ.) वन विभाग भोपाल द्वारा संपन्न हुआ। शिविर का आयोजन श्री नरेन्द्रकुमारजी शिक्षक एवं श्रीमती इन्द्रादेवी जैन देदामूढी परिवार खनियांधाना द्वारा कराया गया।

विधि-विधान का समस्त कार्य पण्डित संजयजी शास्त्री मंगलायतन, पण्डित महेन्द्रजी शास्त्री इन्दौर के निर्देशन में पण्डित मुकेशजी कोठादार, श्री सचिनजी मोदी, पण्डित अंकितजी सरल शास्त्री, पण्डित आकाशजी चौधरी, श्री अभिषेकजी साव, श्री राजेशजी सिंघई, श्री अनिलजी पुरा के सहयोग से संपन्न कराये गये।

अ.भा. जैन पत्र सम्पादक संघ द्वारा –

दो दिवसीय राष्ट्रीय कार्यशाला संपन्न

जयपुर (राज.) : यहाँ श्री दि. जैन अतिशय क्षेत्र श्री पार्श्वनाथ चूलगिरि पर दिनांक 17 व 18 मार्च को अ.भा. जैन पत्र सम्पादक संघ की दो दिवसीय राष्ट्रीय कार्यशाला का आयोजन किया गया। उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता श्री सतीशजी जैन (एस.सी.जे.) दिल्ली ने की। मुख्य अतिथि के रूप में राज. महिला आयोग की अध्यक्ष डॉ.लाडकुमारी जैन, मुख्य वक्ता के रूप में दैनिक पंजाब केसरी के कार्यकारी अध्यक्ष श्री स्वदेशभूषणजी जैन व विशिष्ट अतिथि प्रो. नलिन के. शास्त्री बोधगया थे।

कार्यशाला का उद्घाटन तीर्थक्षेत्र कमेटी के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री आर.के. जैन ने किया।

कार्यक्रम के छह सत्रों में श्री प्रवीणचंद छाबड़ा, डॉ. सुशीला पाटनी, श्री मिलापचंद डंडिया, श्री अनिल लोढा, श्री धर्मेश भारती तथा डॉ. संजीव भानावत जैसे वरिष्ठ पत्रकारों ने पत्रकारिता की गहराई में जाकर विभिन्न पहलुओं पर मार्गदर्शन किया।

कार्यशाला में भाग लेने कोलकाता, नागपुर, इन्दौर, अजमेर, आगरा, उदयपुर आदि स्थानों से लगभग 30 पत्र-पत्रिकाओं के प्रतिनिधि सम्मिलित हुये। समापन सत्र की अध्यक्षता डॉ. चिरंजीलाल बगड़ा ने की। संचालन संस्था के महामंत्री श्री अखिल बंसल ने एवं धन्यवाद ज्ञापन कार्याध्यक्ष श्री अनूपचंद जैन एडवोकेट ने किया। **– अखिल बंसल**

पंचकल्याणक विधान संपन्न

कोटा (राज.) : यहाँ दि. जैन मुमुक्षु आश्रम में दिनांक 8 मार्च को भगवान आदिनाथ पंचकल्याणक विधान का आयोजन श्रीमती तिलक लाभचंद आतरदावालों की ओर से किया गया। इस अवसर पर आचार्य धरसेन महाविद्यालय के विद्यार्थियों की वार्षिक प्रगति रिपोर्ट प्रस्तुत की गई। मुख्य अतिथि के रूप में डॉ. श्रीमती रत्ना जैन (महापौर कोटा) उपस्थित थीं। समारोह की अध्यक्षता श्री सी.एल. प्रेमी (विधायक) ने की।

विधि-विधान के समस्त कार्य श्री रतनचंदजी चौधरी के निर्देशन में पण्डित धर्मेन्द्रजी शास्त्री एवं पण्डित सौरभजी शास्त्री द्वारा संपन्न कराये गये। इस प्रसंग पर जयपुर से पधारे **पण्डित संजीवकुमारजी गोधा** के सारगर्भित प्रवचन का लाभ मिला।

आवश्यकता है

श्री नंदीश्वर विद्यापीठ खनियांधाना में वार्डन, नंदीश्वर विद्यालय में जैन धर्म पढाने हेतु शिक्षक, कम्प्यूटर शिक्षक एवं कक्षा 6वीं से 12वीं तक पढाने हेतु अन्य विषयों में दक्ष शिक्षक की। ह्र प्रमोद जैन (प्राचार्य) 081200-90066, संतोष वैद्य (अध्यक्ष) 09584586077